बड़े भाई साहब - प्रेमचंद

I. पठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

दिए गए गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों से चुनकर लिखिए। [1×5=5]

1. वह स्वभाव से बड़े अध्ययनशील थे। हरदम किताब खोले बैठे रहते और शायद दिमाग को आराम देने के लिए कभी कॉपी पर, किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तसवीरें बनाया करते थे। कभी-कभी एक ही नाम या शब्द या वाक्य दस-बीस बार लिख डालते। कभी एक शेर को बार-बार सुंदर अक्षरों में नकल करते। कभी ऐसी शब्द-रचना करते, जिसमें न कोई अर्थ होता, न कोई सामंजस्य। मसलन एक बार उनकी कॉपी पर मैंने यह इबारत देखी—स्पेशल, अमीना, भाइयों-भाइयों, दरअसल, भाई-भाई। राधेश्याम, श्रीयुत राधेश्याम, एक घंटे तक—इसके बाद एक आदमी का चेहरा बना हुआ था। मैंने बहुत चेष्टा की कि इस पहेली का कोई अर्थ निकालूँ, लेकिन असफल रहा। और उनसे पूछने का साहस न हुआ। वह नौवीं जमात में थे, मैं पाँचवीं में।

(क) कौन हरदम किताब खोले बैठा रहता था?

(*i*) लेखक (*ii*) लेखक के बड़े भाई साहब

(*iii*) लेखक तथा उसके बड़े भाई साहब दोनों (*iv*) इनमें कोई नहीं

(ख) बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए क्या करते थे?

(*i*) कॉपी तथा किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्ते-बिल्लियों की तस्वीरें बनाते

(*ii*) एक ही नाम या शब्द या वाक्य को कई बार सुंदर अक्षरों में लिख जाते

(*iii*) ऐसी शब्द-रचना करते, जिसका न कोई अर्थ होता, न कोई सामंजस्य

(*iv*) उपर्युक्त सभी

(ग) लेखक ने किस पहेली का अर्थ निकालने की कोशिश की?

(*i*) लेखक के बड़े भाई द्वारा दी गई पहेली का

(*ii*) बड़े भाई साहब द्वारा कॉपी पर लिखे गए लेख रूपि पहेली का

(*iii*) बड़े भाई साहब द्वारा कॉपी पर बनाए गए आदमी के चेहरे रूपि पहेली का

(*iv*) (*ii*) तथा (*iii*) दोनों

(घ) लेखक को बड़े भाई साहब से क्या पूछने का साहस न हुआ?

(*i*) बड़े भाई साहब से उनकी इबारक का अर्थ पूछने का

(*ii*) बड़े भाई साहब की कॉपी पर बने आदमी के चेहरे की पहेली का हल पूछने का

(*iii*) बड़े भाई साहब से पढ़ाई के बीच में दिमाग को आराम देने की आवश्यकता का कारण जानने का

(*iv*) (*i*) तथा (*ii*) दोनों

(ङ) लेखक और उसके बड़े भाई साहब में कितनी जमात का अंतर था?

(*i*) चार (*ii*) पाँच (*iii*) छह (*iv*) तीन

2. "इस तरह अंग्रेज़ी पढ़ोगे, तो ज़िंदगी-भर पढ़ते रहोगे और एक हर्फ़ न आएगा। अंग्रेज़ी पढ़ना कोई हँसी-खेल नहीं है कि जो चाहे, पढ़ ले, नहीं ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा सभी अंग्रेज़ी के विद्वान हो जाते। यहाँ रात-दिन आँखें फोड़नी पड़ती हैं और खून जलाना पड़ता है, तब कहीं यह विद्या आती है। और आती क्या है, हाँ कहने को आ जाती है। बड़े-बड़े विद्वान भी शुद्ध अंग्रेज़ी नहीं लिख सकते, बोलना तो दूर रहा। और मैं कहता हूँ, तुम कितने घोंघा हो कि मुझे देखकर भी सबक नहीं लेते। मैं कितनी मेहनत करता हूँ, यह तुम अपनी आँखों से देखते हो, अगर नहीं देखते, तो यह तुम्हारी आँखों का कसूर है, तुम्हारी बुद्धि का कसूर है। इतने मेले-तमाशे होते हैं, मुझे तुमने कभी देखने जाते देखा है? रोज़ ही क्रिकेट और हॉकी मैच होते हैं। मैं पास नहीं फटकता।

(क) ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा अंग्रेज़ी के विद्वान क्यों नहीं हो जाते?

(*i*) अंग्रेज़ी पढ़ना कठिन होने के कारण (*ii*) उनमें इच्छा शक्ति नहीं होने के कारण

(*iii*) योग्य शिक्षक नहीं मिलने के कारण (*iv*) अच्छी पुस्तकों के अभाव में

(ख) कौन-सी विद्या सीखने के लिए रात-दिन आँखें फोड़नी पड़ती हैं तथा खून जलाना पड़ता है?

(*i*) काली विद्या (*ii*) जादू की विद्या

(*iii*) अंग्रेज़ी की विद्या (*iv*) उपर्युक्त सभी

(ग) कौन शुद्ध अंग्रेज़ी नहीं लिख सकते, बोलना तो दूर की बात है?

(*i*) छोटा भाई (*ii*) बड़े भाई साहब (*iii*) बड़े-बड़े विद्वान (*iv*) इनमें से कोई नहीं

(घ) बड़े भाई साहब के अनुसार क्या नहीं देखना छोटे भाई की आँखों और बुद्धि का कसूर है?

(*i*) मेले-तमाशे (*ii*) फ़िल्म

(*iii*) विभिन्न खेलों के मैच (*iv*) बड़े भाई साहब की पढ़ाई की मेहनत

(ङ) बड़े भाई साहब क्रिकेट और हॉकी मैचों के पास भी नहीं फटकते। क्यों?

(i) मैच रोचक न होने के कारण
(ii) खेलों में रुचि नहीं होने के कारण
(iii) बराबर पढ़ाई में लगा रहने के कारण
(iv) स्टेडियम दूर होने के कारण

3. मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता। जवाब ही क्या था। अपराध तो मैंने किया, लताड़ कौन सहे? भाई साहब उपदेश की कला में निपुण थे। ऐसी-ऐसी लगती बातें कहते, ऐसे-ऐसे सूक्ति-बाण चलाते कि मेरे जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो जाते और हिम्मत टूट जाती। इस तरह जान तोड़कर मेहनत करने की शक्ति मैं अपने में न पाता था और उस निराशा में ज़रा देर के लिए मैं सोचने लगता-'क्यों न घर चला जाऊँ। जो काम मेरे बूते के बाहर है, उसमें हाथ डालकर क्यों अपनी ज़िंदगी खराब करूँ।' मुझे अपना मूर्ख रहना मंज़ूर था, लेकिन उतनी मेहनत से मुझे तो चक्कर आ जाता था, लेकिन घंटे-दो घंटे के बाद निराशा के बादल छट जाते और मैं इरादा करता कि आगे से खूब जी लगाकर पढ़ूँगा।

(क) लेखक से कौन-सा अपराध हो गया था?

(i) उसने बड़े भाई साहब को जवाब दिया था।
(ii) उसने बड़े भाई साहब की बातों को अनसुना किया था।
(iii) उसने पढ़ाई-लिखाई की जगह खेल-कूद में समय लगाया था।
(iv) इनमें से कोई नहीं

(ख) कौन उपदेश की कला में निपुण था?

(i) बड़े भाई साहब
(ii) छोटा भाई
(iii) बड़े तथा छोटे भाई दोनों
(iv) इनमें से कोई नहीं

(ग) लेखक की हिम्मत टूट जाती तथा उसके जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो जाते, क्यों?

(i) बड़े भाई साहब की चुभने वाली बातों तथा सूक्ति बाणों से
(ii) बड़े भाई साहब की निराशा भरी बातों से
(iii) परीक्षा में बार-बार असफल होने के कारण
(iv) उपर्युक्त सभी

(घ) लेखक अपने अंदर कैसी शक्ति नहीं पाता था?

(i) बार-बार असफल होने के बाद भी पुनः उठ खड़े होने की
(ii) जान तोड़कर मेहनत करने की
(iii) बड़े भाई साहब के सवालों का जवाब देने की
(iv) इनमें से कोई नहीं

(ङ) थोड़ी देर के लिए वापस घर चले जाने तथा पढ़ाई छोड़ने की बात लेखक के मन में क्यों उठी?

(i) लेखक की चुभती बातों से निराश होने के कारण
(ii) अपने में जी तोड़कर पढ़ाई-लिखाई की क्षमता न पाकर
(iii) अपनी कक्षा में लगातार असफल होने के कारण
(iv) इनमें से कोई नहीं

4. पहले ही दिन उसकी अवहेलना शुरू हो जाती। मैदान की वह सुखद हरियाली, हवा के हलके-हलके झोंके, फुटबाल की वह उछल-कूद, कबड्डी के वह दाँव-घात, वॉलीबाल की वह तेज़ी और फुरती, मुझे अज्ञात और अनिवार्य रूप से खींच ले जाती और वहाँ जाते ही मैं सब कुछ भूल जाता। वह जानलेवा टाइम-टेबिल, वह आँखफोड़ पुस्तकें, किसी की याद न रहती और भाई साहब को नसीहत

और फ़जीहत का अवसर मिल जाता। मैं उनके साये से भागता, उनकी आँखों से दूर रहने की चेष्टा करता, कमरे में इस तरह दबे पाँव आता कि उन्हें खबर न हो। उनकी नज़र मेरी ओर उठी और मेरे प्राण निकले। हमेशा सिर पर एक नंगी तलवार-सी लटकती मालूम होती। फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार न कर सकता था।

(क) भाई साहब को नसीहत और फ़जीहत का अवसर क्यों मिल जाता?

(i) छोटे भाई का उनकी बात न मानने के कारण

(ii) छोटे भाई का टाइम-टेबिल के अनुसार काम न करके खेल-कूद पर ध्यान देने के कारण

(iii) छोटे भाई का अपनी कक्षा में लगातार असफल होने के कारण

(iv) उपर्युक्त सभी

(ख) छोटा भाई क्यों बड़े भाई साहब के साये से दूर भागने तथा उनकी आँखों से दूर रहने की चेष्टा करने लगा?

(i) उनकी काम बताने की आदत से बचने के लिए

(ii) उनकी नसीहत तथा फ़जीहत से बचने के लिए

(iii) ताकि उनको उसके खेल-कूद में भाग लेने का पता न चल सके

(iv) इनमें से कोई नहीं

(ग) 'हमेशा सिर पर एक नंगी तलवार-सी लटकती मालूम होती।' इसका आशय है।

(i) लेखक को सदा बड़े भाई साहब की निगरानी तथा डाँट-फटकार का डर बना रहता।

(ii) लेखक को अपने भाई साहब की सलाह तथा उनके द्वारा किए जाने वाले अपमान का खतरा बना रहता।

(iii) (i) तथा (ii) दोनों (iv) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(घ) लेखक फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार क्यों नहीं कर सकता था?

(i) खेल-कूद में सुनहरा भविष्य दिखने के कारण

(ii) खेल से मिलने वाले आनंद तथा उसमें अत्यधिक मन लगने के कारण

(iii) फटकार तथा घुड़कियों का असर समाप्त हो जाने के कारण

(iv) भाई साहब की फटकार तथा घुड़कियों को महत्व न देने के कारण

(ङ) आदमी मौत और विपत्ति के बीच भी मोह और माया के बंधन में क्यों जकड़ा रहता है?

(i) मोह और विपत्ति से अत्यधिक लगाव के कारण

(ii) मौत और विपत्ति से मुक्त न होने के कारण

(iii) मोह और माया से मुक्त न होने के कारण

(iv) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

5. सालाना इम्तिहान हुआ। भाई साहब फ़ेल हो गए, मैं पास हो गया और दरजे में प्रथम आया। मेरे और उनके बीच में केवल दो साल का अंतर रह गया। जी में आया, भाई साहब को आड़े हाथों लूँ–'आपकी वह घोर तपस्या कहाँ गई? मुझे देखिए, मज़े से खेलता भी रहा और दरजे में अव्वल भी हूँ।' लेकिन वह इतने दुखी और उदास थे कि मुझे उनसे दिली हमदर्दी हुई और उनके घाव पर नमक छिड़कने का विचार ही लज्जास्पद जान पड़ा। हाँ, अब मुझे अपने ऊपर कुछ अभिमान हुआ और आत्मसम्मान भी बढ़ा। भाई साहब का वह रौब मुझ पर न रहा। आज़ादी से खेलकूद में शरीक होने लगा। दिल मज़बूत था। अगर उन्होंने फिर मेरी फ़जीहत की, तो साफ़ कह दूँगा–'आपने अपना

खून जलाकर कौन-सा तीर मार लिया। मैं तो खेलते-कूदते दरजे में अव्वल आ गया।' ज़बान से यह हेकड़ी जताने का साहस न होने पर भी मेरे रंग-ढंग से साफ़ ज़ाहिर होता था कि भाई साहब का वह आतंक मुझ पर नहीं था।

(क) सालाना इम्तिहान का क्या परिणाम निकला?

(i) बड़े भाई साहब अपने दरजे में फेल हो गए।

(ii) छोटा भाई पास होने के साथ-साथ अपने दरजे में प्रथम आया।

(iii) बड़े भाई साहब तथा छोटे भाई के बीच अब दो दरजे का अंतर रह गया।

(iv) उपर्युक्त सभी

(ख) छोटे भाई को क्या लज्जास्पद जान पड़ा?

(i) बड़े भाई साहब के सालाना इम्तिहान में फ़ेल होने के बाद उनसे उनकी घोर तपस्या के बारे में पूछने की बात मन में आना

(ii) छोटे भाई को अपने ऊपर हुए अभिमान का पता चलना

(iii) बड़े भाई साहब के लेखक को फ़जीहत करने पर उन्हें जवाब देने की सोचना

(iv) इनमें से कोई नहीं

(ग) बड़े भाई साहब क्यों दुखी और उदास थे?

(i) छोटे भाई के पास होने के कारण

(ii) खुद के फ़ेल होने के कारण

(iii) छोटे भाई के बात न मानने के कारण

(iv) छोटे भाई के ताना मारने के कारण

(घ) छोटे भाई का अभिमान और आत्मसम्मान क्यों बढ़ गया?

(i) बड़े भाई का उसकी फ़जीहत नहीं करने के कारण

(ii) बड़े भाई के अपने दरजे में फ़ेल होने तथा खुद के अपने दरजे में प्रथम स्थान के साथ पास होने के कारण

(iii) खुद के खेल-कूद में काफी अच्छा करने के कारण

(iv) उपर्युक्त सभी

(ङ) सालाना इम्तिहान का परिणाम आने के बाद निम्नलिखित में से क्या नहीं हुआ?

(i) बड़े भाई साहब का लेखक पर पहले जैसा रौब नहीं रहा

(ii) लेखक आज़ादी से खेलकूद में शरीक होने लगा

(iii) बड़े भाई साहब के फ़जीहत करने पर उनको जवाब देने की बात लेखक के मन में आई

(iv) इनमें से कोई नहीं

6. महज़ इम्तिहान पास कर लेना कोई चीज़ नहीं, असल चीज़ है बुद्धि का विकास। जो कुछ पढ़ो, उसका अभिप्राय समझो। रावण भूमंडल का स्वामी था। ऐसे राजाओं को चक्रवर्ती कहते हैं। आजकल अंग्रेज़ों के राज्य का विस्तार बहुत बढ़ा हुआ है, पर इन्हें चक्रवर्ती नहीं कह सकते। संसार में अनेक राष्ट्र अंग्रेज़ों का आधिपत्य स्वीकार नहीं करते, बिलकुल स्वाधीन हैं। रावण चक्रवर्ती राजा था, संसार के सभी महीप उसे कर देते थे। बड़े-बड़े देवता उसकी गुलामी करते थे। आग और पानी के देवता भी उसके दास थे, मगर उसका अंत क्या हुआ? घमंड ने उसका नाम-निशान तक मिटा दिया, कोई उसे एक चुल्लू भर पानी देने वाला भी न बचा। आदमी और जो कुकर्म चाहे करे, पर अभिमान न करे, इतराये नहीं। अभिमान किया और दीन-दुनिया दोनों से गया।

(क) रावण को चक्रवर्ती राजा कहने का क्या कारण है?

(i) रावण भूमंडल का स्वामी था
(ii) संसार के सभी महीप उसे कर देते थे
(iii) संसार के सभी महीप उसका आधिपत्य स्वीकार करते थे
(iv) उपर्युक्त सभी

(ख) शिक्षा-प्राप्ति का मूल उद्देश्य है–

(i) केवल इम्तिहान पास कर लेना
(ii) बुद्धि का विकास करना
(iii) पढ़ी चीज़ों का अभिप्राय समझना
(iv) (ii) तथा (iii) दोनों

(ग) अंग्रेज़ों को चक्रवर्ती क्यों नहीं कहा जा सकता?

(i) अंग्रेज़ों के राज्य का विस्तार संपूर्ण भूमंडल पर नहीं था
(ii) संसार के सभी राष्ट्र अंग्रेज़ों का आधिपत्य स्वीकार नहीं करते
(iii) (i) तथा (ii) दोनों
(iv) इनमें से कोई नहीं

(घ) रावण का अंत क्यों हुआ?

(i) देवताओं को अपना दास बनाने के कारण
(ii) संसार के सभी राजाओं से कर लेने के कारण
(iii) स्वयं पर अभिमान करने के कारण
(iv) सभी बंधु-बांधवों के मारे जाने के कारण

(ङ) आदमी को कौन-सा कर्म नहीं करना चाहिए?

(i) अभिमान करना (ii) इतराना (iii) लोगों को सताना (iv) (i) और (ii) दोनों

7. **अनर्थ तो यह है कि कहा जाता है, संक्षेप में लिखो। समय की पाबंदी पर संक्षेप में एक निबंध लिखो, जो चार पन्नों से कम न हो। ठीक। संक्षेप में तो चार पन्ने हुए, नहीं शायद सौ-दो-सौ पन्ने लिखवाते। तेज़ भी दौड़िए और धीरे-धीरे भी। है उलटी बात, है या नहीं? बालक भी इतनी-सी बात समझ सकता है, लेकिन इन अध्यापकों को इतनी तमीज़ भी नहीं। उस पर दावा है कि हम अध्यापक हैं। मेरे दरजे में आओगे लाला, तो ये सारे पापड़ बेलने पड़ेंगे और तब आटे-दाल का भाव मालूम होगा। इस दरजे में अव्वल आ गए हो, तो ज़मीन पर पाँव नहीं रखते। इसलिए मेरा कहना मानिए। लाख फ़ेल हो गया हूँ, लेकिन तुमसे बड़ा हूँ, संसार का मुझे तुमसे कहीं ज़्यादा अनुभव है। जो कुछ कहता हूँ उसे गिरह बाँधिए, नहीं पछताइएगा।**

(क) क्या संक्षेप में लिखने के लिए कहा जाता है?

(i) लेख (ii) निबंध (iii) कहानी (iv) भाषण

(ख) लेखक के अनुसार अगर संक्षेप में लिखा जाने वाला निबंध चार पन्नों का होगा तो वह निबंध कितने पन्नों में लिखा जाएगा जो संक्षेप में नहीं लिखना होगा?

(i) दस-बारह पन्नों में
(ii) बीस-इक्कीस पन्नों में
(iii) पचास-साठ पन्नों में
(iv) सौ-दो सौ पन्नों में

(ग) लेखक के अनुसार अध्यापकों को किस बात की तमीज़ नहीं?

(i) कि संक्षेप में लिखी जाने वाली बात चार पन्नों में नहीं लिखी जा सकती
(ii) कि एक ही समय तेज़ और धीरे-धीरे नहीं दौड़ा जा सकता
(iii) (i) तथा (ii) दोनों
(iv) इनमें से कोई नहीं

(घ) 'मेरे दरजे में आओगे लाला, तो ये सारे पापड़ बेलने पड़ेंगे।' का आशय क्या है?

(i) लेखक के बड़े भाई के दरजे में आने पर संक्षिप्त निबंध आदि लिखना पड़ेगा
(ii) लेखक को पापड़ का व्यापार करना पड़ेगा

लेखक को बेचने के लिए पापड़ बेलना पड़ेगा

(iii) लेखक को बेचने के लिए पापड़ बेलना पड़ेगा

(iv) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(ङ) बड़े भाई किस मामले में छोटे भाई से आगे हैं?

(i) संसार के अनुभव के मामले में (ii) उम्र के मामले में

(iii) ज्ञान के मामले में (iv) (i) तथा (ii) दोनों

8. स्कूल का समय निकट था, नहीं ईश्वर जाने, यह उपदेश-माला कब समाप्त होती। भोजन आज मुझे निःस्वाद-सा लग रहा था। जब पास होने पर यह तिरस्कार हो रहा है, तो फ़ेल हो जाने पर तो शायद प्राण ही ले लिए जाएँ। भाई साहब ने अपने दरजे की पढ़ाई का जो भयंकर चित्र खींचा था, उसने मुझे भयभीत कर दिया। स्कूल छोड़कर घर नहीं भागा, यही ताज्जुब है, लेकिन इतने तिरस्कार पर भी पुस्तकों में मेरी अरुचि ज्यों-की-त्यों बनी रही। खेल-कूद का कोई अवसर हाथ से न जाने देता। पढ़ता भी, मगर बहुत कम। बस, इतना कि रोज़ टास्क पूरा हो जाए और दरजे में ज़लील न होना पड़े। अपने ऊपर जो विश्वास पैदा हुआ था, वह फिर लुप्त हो गया और फिर चोरों का-सा जीवन कटने लगा।

(क) लेखक के अनुसार बड़े भाई साहब की उपदेश-माला क्यों समाप्त हो गई?

(i) स्कूल का समय निकट होने के कारण (ii) बड़े भाई के थक जाने के कारण

(iii) छोटे भाई के हार मान लेने के कारण (iv) उपर्युक्त सभी

(ख) लेखक को आज भोजन क्यों निःस्वाद लग रहा था?

(i) तबीयत ठीक नहीं होने के कारण (ii) बहुत अधिक थक जाने के कारण

(iii) बड़े भाई साहब का उपदेश सुनने के कारण (iv) इनमें से कोई नहीं

(ग) लेखक को किस चीज़ ने भयभीत कर दिया?

(i) बड़े भाई साहब के दरजे की पढ़ाई के भयंकर चित्र ने

(ii) बड़े भाई साहब की उपदेश-माला ने (iii) बड़े भाई साहब की नसीहतों एवं फ़जीहतों ने

(iv) इनमें से कोई नहीं

(घ) लेखक कितनी पढ़ाई करते थे?

(i) बहुत ज़्यादा (ii) ज़रूरत के अनुसार

(iii) उतना ही जिससे टास्क पूरा हो जाए और दरज़े में ज़लील न होना पड़े

(iv) पढ़ना ही बंद कर दिया।

(ङ) बड़े भाई साहब के उपदेशों का लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा?

(i) विश्वास बढ़ गया (ii) विश्वास लुप्त हो गया।

(iii) विश्वास कम हो गया (iv) इनमें से कोई नहीं

दिए गए गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विकल्पों से चुनकर लिखिए। [1×5=5]

अब भाई साहब बहुत कुछ नरम पड़ गए थे। कई बार मुझे डाँटने का अवसर पाकर भी उन्होंने धीरज से काम लिया। शायद अब वह खुद समझने लगे थे कि मुझे डाँटने का अधिकार उन्हें नहीं रहा, या रहा भी, तो बहुत कम। मेरी स्वच्छंदता भी बढ़ी। मैं उनकी सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा। मुझे कुछ ऐसी धारणा हुई कि मैं पास हो ही जाऊँगा, पढ़ूँ या न पढ़ूँ, मेरी तकदीर बलवान है, इसलिए भाई साहब के डर से जो थोड़ा-बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बंद हुआ। मुझे कनकौए उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया था और अब सारा समय पतंगबाज़ी की ही भेंट होता था, फिर भी मैं भाई साहब का अदब करता था और उनकी नज़र बचाकर कनकौए उड़ाता था। मांझा देना, कन्ने बाँधना, पतंग टूर्नामेंट की तैयारियाँ आदि समस्याएँ सब गुप्त रूप से हल की जाती थीं।

(क) अब भाई साहब क्यों बहुत कुछ नरम पड़ गए थे?

(*i*) लेखक के लगातार दूसरी बार अपने दरज़े में अव्वल रहते हुए पास होने के कारण

(*ii*) बड़े भाई साहब के फिर से फेल होने के कारण

(*iii*) (*i*) तथा (*ii*) दोनों

(*iv*) इनमें से कोई नहीं

(ख) भाई साहब के नहीं डाँटने का लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा?

(*i*) लेखक की स्वच्छंदता बढ़ गई (*ii*) लेखक धीर-गंभीर हो गया

(*iii*) लेखक ने बड़े भाई साहब का सम्मान और लिहाज़ करना बंद कर दिया।

(*iv*) उपर्युक्त सभी

(ग) लेखक की पढ़ाई-लिखाई क्यों बंद हो गई?

(*i*) हर हाल में अपने पास हो जाने की धारणा बन जाने के कारण

(*ii*) लेखक की स्वयं की तकदीर बलवान होने के कारण

(*iii*) भाई साहब कर डर दिल से निकल जाने के कारण

(*iv*) उपर्युक्त सभी

(घ) लेखक को किस चीज़ का नया शौक पैदा हो गया था?

(*i*) गुल्ली-डंडा खेलने का (*ii*) कनकौए उड़ाने का

(*iii*) बटेर लड़ाने का (*iv*) मुर्गे लड़ाने का

(ङ) लेखक कनकौए उड़ाने, माँझा देने, कन्ने बाँधने, पतंग टूर्नामेंट की तैयारियाँ आदि काम बड़े भाई की नज़र बचाकर क्यों करता था?

(*i*) उसे अपने इन कामों में बड़े भाई के शामिल होने का डर रहता था

(*ii*) बड़े भाई साहब के सम्मान और लिहाज़ को बनाए रखने के लिए

(*iii*) भाई साहब का अदब करने के लिए (*iv*) (*ii*) और (*iii*) दोनों

पाठाधारित मुहावरे

दीवार खड़ी करना– बाधा उत्पन्न करना, **डेरा डालना**– स्थायी रूप से रहना

अब कहाँ दूसरों के दुख से दुखी होने वाले – निदा फ़ाज़ली

I. पठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

दिए गए गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों से चुनकर लिखिए। [1×5=5]

1. **बाइबिल के सोलोमेन जिन्हें कुरआन में सुलेमान कहा गया है, ईसा से 1025 वर्ष पूर्व एक बादशाह थे। कहा गया है, वह केवल मानव जाति के ही राजा नहीं थे, सारे छोटे-बड़े पशु-पक्षी के भी हाकिम थे। वह इन सबकी भाषा भी जानते थे। एक दफा सुलेमान अपने लश्कर के साथ एक रास्ते से गुज़र रहे थे। रास्ते में कुछ चींटियों ने घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनी तो डर कर एक-दूसरे से कहा, 'आप जल्दी से अपने-अपने बिलों में चलो, फ़ौज आ रही है।' सुलेमान उनकी बातें सुनकर थोड़ी दूर पर रुक गए और चींटियों से बोले, 'घबराओ नहीं, सुलेमान को खुदा ने सबका रखवाला बनाया है। मैं किसी के लिए मुसीबत नहीं हूँ, सबके लिए मुहब्बत हूँ।' चींटियों ने उनके लिए ईश्वर से दुआ की और सुलेमान अपनी मंज़िल की ओर बढ़ गए।**

(क) बाइबिल के सोलोमेन को कुरआन में किस नाम से जाना जाता है?

(*i*) सोलीमीन (*ii*) सुलेमीन (*iii*) सुलेमान (*iv*) सोलोमन

(ख) कुरआन में वर्णित वे पुरुष कौन थे जो न केवल मानव जाति के राजा थे, बल्कि छोटे-बड़े सभी पशु-पक्षियों के भी हाकिम थे?

(*i*) सुलेमान (*ii*) सुलमान (*iii*) सुलमन (*iv*) सलेमान

(ग) सुलेमान किनकी भाषा जानते थे?

(i) पशु-पक्षियों की (ii) सभी मनुष्यों की (iii) पेड़-पौधों की (iv) पर्वत-घाटियों की

(घ) सुलेमान के लश्कर के घोड़ों के टापों की आवाज़ सुनकर कौन डर गई?

(i) मधुमक्खियाँ (ii) चींटियाँ (iii) बकरियाँ (iv) तितलियाँ

(ङ) सुलेमान के लिए किसने ईश्वर से दुआ की?

(i) प्रजा ने (ii) घोड़ों ने (iii) चींटियों ने (iv) इनमें से कोई नहीं

2. ऐसी एक घटना का ज़िक्र सिंधी भाषा के महाकवि शेख अयाज़ ने अपनी आत्मकथा में किया है। उन्होंने लिखा है–'एक दिन उनके पिता कुएँ से नहाकर लौटे। माँ ने भोजन परोसा। उन्होंने जैसे ही रोटी का कौर तोड़ा। उनकी नज़र अपनी बाजू पर पड़ी। वहाँ एक काला च्योंटा रेंग रहा था। वह भोजन छोड़कर उठ खड़े हुए।' माँ ने पूछा, 'क्या बात है? भोजन अच्छा नहीं लगा?' शेख अयाज़ के पिता बोले, 'नहीं, यह बात नहीं है। मैंने एक घर वाले को बेघर कर दिया है। उस बेघर को कुएँ पर उसके घर छोड़ने जा रहा हूँ।' बाइबिल और दूसरे पावन ग्रंथों में नूह नाम के एक पैगंबर का ज़िक्र मिलता है। उनका असली नाम लशकर था।

(क) शेख अयाज़ किस भाषा के कवि थे?

(i) हिंदी (ii) सिंधी (iii) गुजराती (iv) मराठी

(ख) भोजन करते समय महाकवि अयाज़ के पिता ने अपनी बाजू पर क्या देखा?

(i) पसीना (ii) पानी (iii) मक्खी (iv) च्योंटा

(ग) अयाज़ के पिता जी भोजन छोड़कर क्यों उठ खड़े हुए?

(i) भोजन अच्छा नहीं होने के कारण

(ii) कुछ अति आवश्यक काम याद आ जाने के कारण

(iii) बेघर हुए च्योंटे को उसके घर पर छोड़ने जाने के लिए

(iv) इनमें से कोई नहीं

(घ) अयाज़ के पिता के कारण कौन बेघर हो गया था?

(i) उनका पड़ोसी (ii) एक गरीब किसान (iii) एक च्योंटा (iv) इनमें से कोई नहीं

(ङ) पैगंबर नूह का असली नाम क्या था?

(i) लशकर (ii) लकशर (iii) लरशक (iv) लरकश

3. लेकिन अरब ने उनको नूह के लकब से याद किया है। वह इसलिए कि आप सारी उम्र रोते रहे। इसका कारण एक ज़ख्मी कुत्ता था। नूह के सामने से एक बार एक घायल कुत्ता गुज़रा। नूह ने उसे दुत्कारते हुए कहा, 'दूर हो जा गंदे कुत्ते!' इस्लाम में कुत्तों को गंदा समझा जाता है। कुत्ते ने उनकी दुत्कार सुनकर जवाब दिया...'न मैं अपनी मर्ज़ी से कुत्ता हूँ, न तुम अपनी पसंद से इनसान हो। बनाने वाला सबका तो वही एक है।'

मट्टी से मट्टी मिले, खो के सभी निशान।
किसमें कितना कौन है, कैसे हो पहचान।।

नूह ने जब उसकी बात सुनी और दुखी हो मुद्दत तक रोते रहे। 'महाभारत' में युधिष्ठिर का जो अंत तक साथ निभाता नज़र आता है, वह भी प्रतीकात्मक रूप में एक कुत्ता ही था। सब साथ छोड़ते गए तो केवल वही उनके एकांत को शांत कर रहा था।

(क) पैगंबर लशकर को अरब ने किस नाम से याद किया है?

(i) नूह के लकब (ii) नूह-ए-लकब (iii) नूहेलकब (iv) इनमें से कोई नहीं

(ख) पैंगबर नूह किस कारण सारी उम्र रोते रहे?

(*i*) अत्यधिक दुख के कारण
(*ii*) ईश्वर से साक्षात्कार के लिए
(*iii*) कुत्ते से मिले ज्ञान-बोध के कारण
(*iv*) इनमें से कोई नहीं

(ग) नूह ने किसे दुत्कारा था?

(*i*) गरीब आदमी को
(*ii*) घायल कुत्ते को
(*iii*) अपने शार्गिद को
(*iv*) इनमें से कोई नहीं

(घ) 'महाभारत' में युधिष्ठिर का अंत तक किसने साथ निभाया?

(*i*) भीम
(*ii*) एक पक्ष
(*iii*) एक कुत्ता
(*iv*) द्रौपदी

(ङ) "न मैं अपनी मर्जी से कुत्ता हूँ, न तुम अपनी पसंद से इनसान हो। बनाने वाला सबका तो वही एक है।" यह कथन किसका है?

(*i*) पैगंबर नूह
(*ii*) युधिष्ठिर
(*iii*) घायल कुत्ता
(*iv*) पैगंबर नूह का शिष्य

4. दुनिया कैसे वजूद में आई? पहले क्या थी? किस बिंदु से इसकी यात्रा शुरू हुई? इन प्रश्नों के उत्तर विज्ञान अपनी तरह से देता है, धार्मिक ग्रंथ अपनी-अपनी तरह से। संसार की रचना भले ही कैसे हुई हो लेकिन धरती किसी एक की नहीं है। पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर आदि की इसमें बराबर की हिस्सेदारी है। यह और बात है कि इस हिस्सेदारी में मानव जाति ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। पहले पूरा संसार एक परिवार के समान था अब टुकड़ों में बँटकर एक-दूसरे से दूर हो चुका है। पहले बड़े-बड़े दालानों-आँगनों में सब मिल-जुलकर रहते थे अब छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में जीवन सिमटने लगा है। बढ़ती हुई आबादियों ने समंदर को पीछे सरकाना शुरू कर दिया है, पेड़ों को रास्तों से हटाना शुरू कर दिया है, फैलते हुए प्रदूषण ने पंछियों को बस्तियों से भगाना शुरू कर दिया है।

(क) दुनिया के वजूद में आने के प्रश्न पर विज्ञान तथा धार्मिक ग्रंथों के उत्तर क्या हैं?

(*i*) सबके उत्तर एक जैसे हैं
(*ii*) सबके उत्तर अलग-अलग हैं
(*iii*) सभी धार्मिक ग्रंथों के उत्तर एक जैसे हैं
(*iv*) इनमें से कोई नहीं

(ख) धरती किसकी है?

(*i*) मानवों की
(*ii*) पशु-पक्षियों की
(*iii*) नदी, समंदर, पर्वत आदि प्राकृतिक रूपों की
(*iv*) मानव, पशु, पक्षी, नदी, समंदर, पर्वत आदि सबकी

(ग) धरती की हिस्सेदारी में मानव ने अपनी बुद्धि की बदौलत क्या खड़ी कर दी हैं?

(*i*) बड़ी-बड़ी इमारतें
(*ii*) बड़ी-बड़ी दीवारें
(*iii*) बड़ी-बड़ी मशीनें
(*iv*) इनमें से कोई नहीं

(घ) बढ़ती हुई आबादी का दुष्प्रभाव निम्नलिखित में से कौन-सा नहीं है?

(*i*) समंदर का पीछे सरकाया जाना
(*ii*) पेड़ों को रास्ते से हटाया जाना
(*iii*) पंछियों को बस्तियों से भगाया जाना
(*iv*) इनमें से कोई नहीं

(ङ) धरती के बारे में हमारे मन में कौन से प्रश्न नहीं उठते हैं?

(*i*) यह अस्तित्व में कैसे आई?
(*ii*) इसके बनने के पहले क्या चीज़ थी?
(*iii*) इसकी यात्रा किस बिंदु से शुरू हुई?
(*iv*) इनमें से कोई नहीं

दिए गए गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विकल्पों से चुनकर लिखिए। **[1×5=5]**

ग्वालियर से बंबई की दूरी ने संसार को काफ़ी कुछ बदल दिया है। वर्सोवा में जहाँ आज मेरा घर है, पहले यहाँ दूर तक जंगल था। पेड़ थे, परिंदे थे और दूसरे जानवर थे। अब यहाँ समंदर के किनारे लंबी-चौड़ी बस्ती बन गई है। इस बस्ती ने न जाने कितने परिंदों-चरिंदों से उनका घर छीन लिया है। इनमें से कुछ शहर छोड़कर चले गए हैं। जो नहीं जा सके हैं उन्होंने यहाँ-वहाँ डेरा डाल लिया है। इनमें से दो कबूतरों ने मेरे फ्लैट के एक मचान में घोंसला बना लिया है। बच्चे अभी छोटे हैं। उनके खिलाने-पिलाने की ज़िम्मेदारी अभी बड़े कबूतरों की है। वे दिन में कई-कई बार आते-जाते हैं।

(क) लेखक ग्वालियर से कहाँ गए थे?

(*i*) जयपुर (*ii*) बंबई (*iii*) पूना (*iv*) अहमदाबाद

(ख) बंबई के वर्सोवा में जहाँ आज लेखक का घर है, वहाँ पहले क्या था?

(*i*) समुद्र (*ii*) जंगल (*iii*) पहाड़ी (*iv*) झील

(ग) जंगल की जगह बस्ती बनने का वहाँ के वासिदों पर क्या प्रभाव पड़ा?

(*i*) अनेक परिदों-चरिंदों के घर छिन गए (*ii*) कुछ शहर छोड़कर चले गए

(*iii*) जो शहर छोड़कर न जा सके उन्होंने यहाँ-वहाँ डेरा बना लिया

(*iv*) उपर्युक्त सभी

(घ) वर्सोवा के घर में कबूतरों ने कहाँ घोंसला बनाया था?

(*i*) मचान पर (*ii*) रोशनदान में (*iii*) छज्जे पर (*iv*) इनमें से कोई नहीं

(ङ) कबूतर के छोटे बच्चों को खिलाने-पिलाने की ज़िम्मेदारी किनकी थी?

(*i*) उनके माता-पिता की (*ii*) सभी बड़े कबूतरों की

(*iii*) उड़ना सीख रहे नए कबूतरों की (*iv*) इनमें से कोई नहीं